Vol 7 Issue 2 Nov 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2017

रत्नलाल सांभरिया के कथा साहित्य में दलित विवेचना

डॉ सुरेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
बी.एल.जे.एस. कॉलेज, तोशाम (हरियाणा)

प्रस्तावना :

दलित कथा साहित्य का उद्भव सामन्तवादी, पूंजीवादी तथा अन्य शोषणकारी शक्तियों के विरोध में प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ। भारत के इतिहास में बीसवीं शताब्दी पीड़ित दलित समाज के लिए वरदान सिद्ध हुई। दलित चेतना एक लम्बी प्रक्रिया का परिणाम थी। इसका अंकुरण शोषण में हुआ। विश्व के बड़े देशों के समाज में हुई उथल–पुथल और क्रान्ति ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय शोषित वर्ग को प्रभावित किया। 18वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में फ्रांस की 1780 ई0 की क्रान्ति ने स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व का बीजारोपण किया जिसका प्रभाव जर्मनी, इटली तथा भारत पर भी पड़ा और दलित शोषण का साहित्य के माध्यम से हल खोजने का प्रयास किया गया। बीसवीं सदी के अन्तिम दशकों में दलित साहित्य की रचना इन्हीं परिस्थितियों का परिणाम थी।

दलित कथा साहित्य की विवेचना से पहले 'दलित' शब्द का अर्थ व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि जानना आवश्यक है। 'दलित' शब्द का प्रचलन बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में हुआ। पिछड़ा वर्ग आयोग के अनुसार इस शब्द का पहली बार प्रयोग 1919 ई0 में हुआ। मांटेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार अधिनियम द्वारा अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा बहिष्कृत जातियों के लिए दलित शब्द प्रचलन में आया। 'दलित' का शाब्दिक अर्थ दबाया या कुचला हुआ है।[2] समाज का प्रत्येक अभाव ग्रस्त तथा पीड़ित वर्ग दलित वर्ग में आता है चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिया तथा वैश्य वर्ग हों। इस अर्थ का आधार अर्थिक माना गया और सामाजिक आधार की आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में उपेक्षित और दबा हुआ है।[3] केश्व मेश्राम के अनुसार, ''हजारों वर्षों से जिन लोगों पर अन्याय हुआ ऐसे अछूतों को दलित कहना चाहिए।''[4] डॉ0 भीम राव अम्बेडकर ने 1932 में पूना समझौते के बाद अछूतों के लिए 'डिप्रेस्ड क्लास' शब्द का इस्तेमाल किया।[5] वर्तमान समय में दलित शब्द को व्यापक अर्थो में प्रयोग में लाया गया और इस वर्ग में महिला भी शामिल हो गई क्योंकि वह भी समाज के शोषण का शिकार है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। सदियों से शोषित दलित वर्ग की पीड़ा का सजीव चित्रण साहित्य में हुआ जिसे दलित साहित्य कहा गया। इस वर्ग में अनेक साहित्यकारों ने कार्य किया। जिनमें हरियाणा के रत्न कुमार साम्भरिया भी एक प्रमुख दलित साहित्यकार हैं। इन्होंने दलित समस्या को चित्रित किया और दलित वर्ग में चेतना, आत्मविश्वास और स्वाभिमान उत्पन्न करने का प्रयास किया। इनके द्वारा रचित कथा साहित्य में 'फुलवा' एक प्रसिद्ध कहानी है जो अपने तरीके से दलित वर्ग की दशा का चित्रण करती है तथा साथ–साथ इस वर्ग की वास्तविक मानसिकता से परिचय भी करवाती है।

रत्न कुमार साम्भरिया द्वारा रचित 'फूलवा' कहानी में 'रामेशवर' नामक पात्र गांव से शहर में आता है वह गांव का एक बड़ा जमींदार था। शहर में मौसम खराब हो जाता है और ठहरने के लिए वह अपने गाँव के ही पण्डित माता प्रसाद का मकान खोज रहा है। रामेश्वर के गाव की 'फुलवा' नामक महिला भी इसी कॉलोनी में रहती है जो दलित वर्ग से है। इसका पता भी रामेश्वर के पास था। शहर में रामेशवर को दुःख होता है कि उसके गांव के पण्डित माता प्रसाद को कोई नहीं जानता। जैसे 'रामेश्वर का सिर भिन्ना उठा। पण्डित जी को कोई नहीं जानता, फुलवा के छोरे को पोर–पोरे जानता है। स्कूल वाला उसे एक कंगूरेदार आलीशान कोठी के सामने छोड़कर चला गया था। रामेश्वर को आश्चर्य ने झिंझोड़ा। फुलवा को कोठी है यह?''[6] रामेश्वर वहां जाकर फुलवा को नहीं पहचान पाया और न ही फुलवा रामेश्वर को पहचान पाई। परन्तु बाद में फुलवा ने अपने गांव के जमींदार को पहचान लिया। फुलवा का पति गांव में एक क्रोधित बैल की टक्कर से मर गया था। तब फुलवा का बेटा राधामोहन 10 वर्ष का था। उसी विवश्ता में फुलवा को भी जमींदार के घर काम करना पड़ता था।

रामेश्वर को अपने बड़े जमींदार होने का अहंकार था। इसलिए उसको लगता था कि इतनी बड़ी कोठी फुलवा की नहीं हो सकती। परन्तु रामेश्वर का भ्रम यथार्थ में बदल गया था उसे जानकारी हो गई थी कि यह फुलवा की ही कोठी है। फुलवा किराएदार नहीं, मालकीन है, कोठी की। जात्याभिमानी रामेश्वर दाह से सुलगने लगा था।''[7] 'फुलवा की खुशी के डैने फैले थे। हवा में तिरने लगी थी वह। वह कोठी की एक–एक चीज रामेश्वर को दिखाएगी। ऐसी चीजें गांव के जमींदारोंऔर बनिए–बामनों के घरों में भी शायद हों। वह रामेश्वर को लॉज में ले गई। वहां डाइनिंग सैट पड़ा था। सफेद सनमाईका की टेबल पर रामेश्वर ने झुक कर देखा। टेबल के भीतर भी रामेश्वर था, जैसा कांच में होता है। फुलवा का

सुनहरी फ्रेम वाला चश्मा लूज था। वह नाक तक सरक आता था। चश्मा ठीक करके फुलवा ने उसे बताया, ''रामेश्वर जी, शाम को हम सब यहीं बैठकर भोजन करते हैं। मेहमान भी यहीं भोजन करते हैं। आज रात तुम भी यही बैठकर भोजन करोगे। रामेश्वर को सुई सी चुभी। उसके यहां तो मेहमानों के लिए चटाई बिछती है। यहां रामेश्वर नामक जमींदार का दलित वर्ग के प्रति मानसिकता का ज्ञान होता है। वह गांव की दलित 'फुलवा' का विकास देखकर ईर्ष्या करने लगा था। फुलवा के मकान और प्रत्येक सुविधा को देखकर रामेश्वर को अतीत की एक घटना याद आई। ''सोलह–सत्रह साल की जेहन में पड़ी बात रामेश्वर की याद आ गई थी। फुलवा की जात को जमींदारों के कुएं पर चढ़ने की मनाही थी। वह जिस कुएं से पानी लाती थी, वह आधा कोस दूर था, उसके घर से। रामेश्वर कुएं पर नहा रहा था। फुलवा कुएं के घेर के नीचे खड़ी थी मटका लिए। वह रामेश्वर को बार–बार हाथ जोड़ रही थी– ''आज मुझे गांव जाना है, रामेश्वर जी। दो बाल्टी पानी उंडेल दो मटके में।[8] 'फुलवा का बार–बार 'रामेश्वर' कहना रामेश्वर को काट गया था। उसने गुस्सा कर मटके पर थूक दिया था। फुलवा ने मटका वहीं फोड़ दिया और वह रोती आंख लिए घर आई थी।''[9] प्रस्तुत कहानी में लेखक ने इस मनोदशा का चित्रण किया है कि दलित वर्ग के विकास होने के बाद भी अन्य वर्ग उसके वर्तमान का मूल्यांकन अतीत का मूल्यांकन अतीत की दशा के आधार पर ही करते हैं और वो दलित वर्ग के वर्तमान खुशी जीवन से ईर्ष्या करते हैं।

फुलवा अपना मकान दिखाते हुए कूलर भी दिखाती है और कहती है मैं इसे कभी–कभी चलाती हूं क्योंकि इससे मेरा शरीर चिपचिपा हो जाता है तब रामेश्वर की दलित वर्ग के प्रति मनोदशा देखिए।'' फुलवा की बात सुनकर क्रोध से उबल पड़ा। इसका मुंह नोच लूं कैसे चोंचले चुभला रही है, फुलवा की बच्ची। खेत में तो खम्मे खूडों में लेटकर नींद निकाल लेती थी, आज कूलर से शरीर चिपचिपा हो जाता है''[10] फुलवा के बड़े मकान को देखकर वह बार–बार उसकी अतीत से तुलना कर रहा था जैसे ''बरसात के दिनों में एक दिन झंझा आ गया था। फुलवा की छान उड़–बिखर गई थी। तब उसने ही पचास पूले गिनकर उसे दिए थे कि छान संवरवा लेगी।''[11] दलित वर्ग चाहे कितना ही विकास कर ले वह अपने अतीत की पीड़ा को नहीं भुला पाता। फुलवा को भी उसका अतीत याद आया जैसे ''उसे अतीत स्मरण हो आया था। फुलवा के कच्चे घर की छान पर फुंस नही होती थी। सूरज सारे दिन उसके घर में रहता था। बरसात बाहर भी होती थी और घर में भी नहीं थी। पानी निकालते उसके हाथ टूटने लगते थे। बेदर्द जाड़ा। दिन–रात घर में घुसा रहता था।''[12]

कहानी में फुलवा जब अपने बेटे राधामोहन से फोन पर बात करती है तब भी रामेश्वर ईर्ष्या करने लगता है। जैसे ''रामेश्वर की त्योरियां चढ़ गई थीं– ''बावली सी फुलवा में इतना सयानापन आ गया है, फोन भी कर लेती है।''[13] फुलवा की नौकरानी 'कुंवर' रामेश्वर के लिए पानी व मिठाईयां लाई तो रामेश्वर ने फुलवा से पूछा कि क्या यह घर की बहू है तो फुलवा ने बताया कि नहीं वह नौकरानी है। ''हमने आज तक बेचारी से पूछा नहीं, किस जात की है। खुद ही कहती है, राजपूत हूं। गांव में छत्तीस फांक हैं। शहर में दो ही जात होती हैं, अमीर और गरीब।''[14] 'रामेश्वर शर्म और ग्लानि से नीचे धंसता चला गया था–इतनी बड़ी जात की औरत, फुलवा जैसी छोटी जात के घर नौकरानी।''[15] रामेश्वर अब भी पुरानी मानसिकता में खोया हुआ था और जतिगत दलदल से ऊपर नहीं उठ पाया था। उसने कहा कि ''आडे वक्त आदमी असहाय हो जाता है। एक समय राजा हरीश चन्द्र ने भी नीची जाती के घर पानी भरा था''[16] रामेश्वर यह कह कर ईर्ष्या का भाव दिखा रहा था । उसने सामने रखी मठाई नहीं खाई और पण्डित माता प्रसाद के घर का पता पूछने दांत निकलवाने का बहाना बनाकर मिठाई नहीं खाई।

इसके पश्चात् रामेश्वर के कहने पर फुलवा उसको पण्डित माता प्रसाद के घर ले जाती है और पं. माता प्रसाद का मकान देखकर रामेश्वर हैरान होता है और सोचता है किं ''पं. माता प्रसाद की विधवा परती और फुलवा के बीच गांव में चाहे कितनी दूरियां थीं। एक दूसरे से कपड़े बचाकर चलती थी। लेकिन शहर आकर वे दोनों एक दांत काटी रोटी खाने लग गई थीं।''[17] रामेश्वर की 'परती' और 'फुलवा' का प्रेम पचा नहीं । परती ने फुलवा को पूरा मान–सम्मान दिया और परती ने फुलवा की खुब प्रंशसा की। परन्तु रामेश्वर से रहा नहीं गया। रामेश्वर से सूखा थूक निगला– ''दादी फुलवा सोने की हो जाए, रहेगी उसी जाती की। मैंने तो उसके घर का पानी तक नहीं पिया। धर्म भ्रष्ट होने से मर जाना अच्छा समझता है, रामेश्वर सिंह।''[18] दलित वर्ग के प्रति रामेश्वर नामक पात्र के माध्यम से अन्य वर्ग की मनोदशा का चित्रण हुआ है। 'पंडिताइन ने उसे डाटां– 'तू तो कूएं का मेंढक ही रहा रामेसरिया। अब तो पद और पैसे का जमाना है, जात–पात का नहीं। फुलवती का राधा मोहन कोई छोटा–मोटा अफसर नहीं है। एस.पी. है एस.पी.। एक बात बताऊं तुझे। जाकर मेम साहब के पांव पकड़ ले और तब तक मत छोड़, वह हां न कह दे।

पंडिताइन ने ठंडी सांस ली–''चरण छुऊं बहूरानी के । मेरे बेटे को तो उसी ने दूसरी जिन्दगी दी है।'' रामेश्वर के शरीर पर जैसे किसी ने तेजाब उंडेल दिया था। जिस औरत को वह द्रोपदी सी बेआबरू करने की सोच रहा था, उसी के पाँव पकड़ ले। पंडिताइन ने बात कह दी, अगर दूसरा होता, कंठ पर अंगूठा रख देता। ''[19] रामेश्वर को सुविधा और सम्मान पं. माता प्रसाद के घर नहीं मिला और रात को उसे नींद भी नहीं आयी। चारों तरफ जानवर बंधे हुए थे वह रात को उठकर अपनी चारपाई पर बैठ गया, लगभग 12 बजने वाले थे और वह अपना थैला लेकर घर से बाहर निकला आया उसके कदम अनायास ही फुलवा की कोठी की तरफ बढ़ने लगे थे।

रत्नलाल सामभरिया की 'फुलवा' नामक कहानी दलित वर्ग का अतीत वर्तमान चित्रित कर रही है। कहानी में दिखाया गया कि जातिवाद ग्रामीण वातावरण में अधिक होता है शहरों में कम। आर्थिक विकास के कारण जातिय बन्धन कमजोर होते हैं परन्तु फिर भी दलित वर्ग को अन्य जातियों जितना सम्मान नहीं मिला। परन्तु रत्न लाल सामभरियां का कथा साहित्य एक आशा कि किरण छोड़ता है वह दलित वर्ग में हीन–भावना समाप्त करके आत्मबल और ऊर्जा उत्पन्न करना चाहता है। साथ–साथ प्रस्तुत कहानी यह भी प्रकट कर रही है कि आर्थिक विकास के बाद आशिंक का रूप से कुछ वर्गो की मानसिकता कुछ परिवतर्तित होती है। किन्तु दलित आज भी अपनी स्थापना के लिए संघर्षरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारती, रामबिलास, 20वीं सद में दलित समाज, दिल्ली, 2011 पृ. 19

2. बाहरी डॉ, हरदेव, हिन्दीशब्द कोष, दिल्ली 2000, पृ. 386
3. भारती, रामबिलास, 20वीं सदी में दलित समाज, दिल्ली 2011, पृ. 19
4. वही पृ. 19
5. वही पृ. 19
6. साम्भरिया, रत्न कुमार, दलित समज की कहानियाँ, दिल्ली 2011, पृ. 18
7.वही पृ. 19
8. वही पृ. 19
9. वही पृ. 20
10. वही पृ. 21
11. वही पृ. 21
12. वही पृ. 22
13.वही पृ. 23
14. वही पृ. 23
15. वही पृ. 23
16. वही पृ. 23–24
17. वही पृ. 25
18. वही पृ. 27
19. वही पृ. 27

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com